ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B+' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

प्रधान संपादक

डॉ. मधुकर खराटे

कार्यकारी संपादक

डॉ. राजेंद्र रोटे

अतिथि संपादक

डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. अनिल साळुंखे

डॉ. अरुण घोगरे

डॉ. गजानन चव्हाण

प्रा.एस.डी. कोरेबाईनवाड

संपादकीय एवं प्रकाशकीय कार्यालय

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर-४१६००४.

e-mail : maharashtrahindiparishad@gmail.com

इक्कीसवी सदी की कहानीकार मधु कांकरिया और महानगरीय बोध

प्रा. डॉ. बदने रामकृष्ण दत्तात्रेय
ग्रामिण महा. वसंत नगर, मुखेड जि. नादेड.

Gramin (Vasantdada) Mahavidyalaya, Vasantnagar ☆ Tq. Mukhed Dist. Nanded ☆ College Code 117

इक्कीसवीं सदी के उषा काल में हिंदी महिला कहानिकारों की परंपरा में चित्रा मुद्गल, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा इन चर्चित कहानिकारों के साथ ही विशेष उल्लेखनीय नाम है मधु कांकरिया जिन्होंने समकालीन नारी विमर्श और सामाजिक सरोकारों की नई सोच और दृष्टि दी है । उनके कहानियों में महानगरों की सडती गलियों से लेकर महानगरीय समस्याओं के साथ ही सामाजिक मूल्यों का गीरता स्तर भी दिखाई देता है । उनके अब तक चार कहानी संग्रह प्रकाशि हो चुके, है जो इक्कीसवीं सदी का आगाज करते हैं । १. बीतते हुए (२००४), २. भरी दोपहरी के अंधेरे (२००७), ३. और आंत में ईशु (२००८), ४. चिड़ियाँ ऐसे मरती है (२०१५)।

मधु कांकरिया का जन्म २३ मार्च १९५७ को सुप्रसिध्द शहर कलकत्ता में हुआ । जो भारतीय महानगरी की सूची में आनेवाला महानगर है । आधुनिकता की दहलीज पर पाँव रखतेही लेखिका ने कलकत्ता की महानगरीय जीवन को खुद देखा और जिया भी है । इसलिए उनके कहानियों में महानगरी जीवन का सच यथार्थ बनकर दिखाई देता है । सामान्यतः महानगरीय जीवन में चमचमाती दुनिया के साथ ही सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक स्तरों का पाखंड भी होता है । सामाजिक बदलते मूल्यों के साथ ही कई प्रकार की संस्थाओं का गीरता हुआ स्तर भी दिखाई देता है । भारतीय महानगरों में दिल्ली, कलकत्ता, मुंबई चेन्नई, आते हैं । जिनकी जनसंख्या दस हजारों के उपर की है । महानगरों की निर्मिती गाँव-शहर-महानागर की परिधि से होकर हमानवीय विकास का आगाज करती है । लेकिन इस विकास के साथ ही महानगरीय समाज समस्याओं के घेरो में गीरता हुआ दिखाई देता है । महानगरों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक सस्थाओं के सामने आज कई प्रकार की चुनोतियाँ खड़ी हुई है । इस बात को मधुजी की कहानियाँ अभिव्यक्त करती है ।

१) रहना नहीं देश बिराना है -

यह कहानी एक दीप, ज्योति नामक युवक की जो डॉक्टरी की पढाई करने दिल्ली से कलकत्ता आता है । कलकत्ता में उसे महानगरी शिक्षा व्यवस्था में चल रही रेंगींग का सामना करना पडता है । दिल्ली में उसकी माँ अकेली रहती है । अपने माँ की चिंता में वह बेचन रहने लगता है । दरअसल वह गेर कलकतिया होने के कारण, उसे कलकत्ता के मेडिकल होस्टेल में बहुत तकलीफों का सामाना करना पडता है । सिर्फ पढ़ाई से वास्ता रखो तो भी जीने नहीं देते लोग । किचन में मुँह मारते कुत्ते, दाल में कॉकरोच और इतना ही नहीं छात्र परिषद और एस. एफ. आई दोनों ही युनियन इलेक्शन में वोट के लिए धमकाते । ऐसी महानगरीय शिक्षा संस्कृति में पीसता रहता दीप ज्योति, फिर भी कई संघर्षो का सामना करते-करते उसे गोल्ड मेंडल मिलता है । इसके बाद वह अपने देश की महानगरीय संस्कृति से तंग आकर केलिफोर्निया जाने के बारे में पडोस की आंटी को कहता है - ^^यहाँ पर तो प्रतिभा के साथ-साथ गॉडफादर चाहिए या शॉर्टकट के हथकड़े और तिकडमबाजी । खलिस प्रतिभा और मेहनत यहाँ टके सेर बिकती है ।**[२] इस प्रकार अपनेही देश में बेगानी लगनेवाली महानगरीय संस्कृति पर लेखिका तिखा व्यंग्य करती है ।

२. लोड शेडिंग -

यह कहानी कलकत्ता शहर की भीड़ भड़ाक, शेयर बाजार की उठापटक शेयअ ब्रोकर्स का फाटका पीते वालो (खरीदारो) की समस्याएँ जेसी बाजारवादी माहोल में दिव्यप्रेम की अभिव्यक्ती करती है । कलकत्ते के भीड भरे इलाके की बहुमंजिली इमारत का एक ऑफिस जो शेयर ब्रोकर फर्म है । करोडों रुपयों के शयर रोज खारीदे और बेचे जाते हैं । इनके तीन मालिको में से योगेश एक है जो इस महानगरीय जीवन की साठियों से ऊँचाईयों पर चढना चाहता है । शेयर मार्केट की तेजी के साथ ताल मेल मिलाता योगेश अपना वैयक्तिक जीवन मानो भूल ही गया है । पत्नी का उबटन भरा शृंगार, हाथें की मेहदी यहाँ तक की बेटे की मुस्कान तक का उसे भान नही है । इसी तेजी-मंदी के खेल में एक दिन शेयर मार्केट धड़ाम से जमीन पर आ जाता है । योगेश पूरी तरह से टूट जाता है। ^^खुद को कोई समझ थी नहीं, कोई और समझा सके ऐसा सहृदय मित्र नारी, साहित्य या कविता थी नही जिंदगी में**[३] एक अजीब तरह की घुटन-असुरक्षा एक अतृप्ति वह महसूस करता है । मधुजी ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से महानगरीय बाजारवाद की अंधी दोड़ को व्यक्त किया है ।

३. फाइल -

इस कहानी में कलकत्ता जेसे महानगर के स्ट्रीट चिल्ड्रेन के लिए करनेवाली सबसे नामी स्वयंसेवी संस्था का वर्णन किया गया है । ऐसी सस्था का नाम ^सिनी आशा* है, जिसे एक आयरलेण्डवासी ने बनाया था । इस संस्था में अनेक अनाथ, गरीब और फुटपाथ पर रहवाले बच्चों को रखा जाता था । इनके साथ ही सिनी आशा के होस्टेल में लालबत्ती इलाकों की जख्म खायी किशोरियों को भी स्थान मिलता है । यहां रहनेवाली लडकियों में कोई अपनी परिस्थिति से तंग, तो कोई होस्टेल के नियमों से बेहाल, उस पर वार्डन की मार-पीट, डाँट-फटकार और चोबीस घण्टों झिकझिक । मंगला और झुनिया तो भागने की कोशिश में पकडी जाती है । यहाँ रहने वाले हर बच्चे की ^फाइल* तैयार की जाती है । उसका जीवन ब्योरा यहाँ होता है । श्यामली दी जबकी फाइली बनाती है । इस संस्था के सारे बच्चे खतरनाक है । पिंकी अभी-अभी इस संस्था में आई थी, उसकी फाइल भी बनाई गई थी । उसकी माँ खुद वेश्या बनी और उसे

 ISSN 2394-2266

भी उसी नरक में घसीटा । उसके फाइल में स्पष्ट लिखा था । ^^वर्ष से १४ वर्ष की उम्र तक उसके साथ कई बार बलात्कार हुआ और वह भी उसकी माँ के ग्राहकों द्वारा ही ।**३ भोला नामक लड़के से वह प्रेम करती है, जो की इस संस्था में वह अभि-अभि आया था । लेकिन उसकी फाइल पढ़कर उसे पता चलता है कि, वह एक वेश्या की लड़की है । और पिंकी से रिश्ता तोड देता है । पिंकी काफी आहात होती है । ^^जितना नुकसान मेरी माँ न मेरा नहीं किया उससे जयादा फाइलों के इन खुले जबड़ों ने किया है ।**४ इन सबके लिए केवल उसकी ^फाइल* जिम्मेदार होती है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से महानगरीय व्यवस्था में ऐसी कई सामाजिक संस्थाए है, जीसमें कई फाइल बनती और जीवन बरबाद होते हैं । इसी नशा को मधु कांकरीयाने अंकित किया है ।

४. लेडी बॉस -

प्रस्तुत कहानी महानगर की एक सॉफ्टवेअर कंपनी की बॉस - ^लेडी बॉस* की है, जिसने बंगलोर से कंप्युटर विज्ञान में एम. टेक करने के बाद अमरीका से मास्टर डिग्री हासिल की । ३०-३२ आयु के आसपास की मॅडम बुध्दि से दिपदिपाती आँखोंवाली उसके मुस्कान के आगे मोनालिसा की मुस्कान भी फीकी लगे । कंपनी का पूरा स्टाफ उसकी कंट्रोल में है। हर कैरियरिस्ट औरत को यही लगता है कि, कहीं कोई उसके औरत होने का अनुचित फायदा न उठा ले, इस कारण हमेशा आक्रमक और स्ट्रीक्ट रहती । मॅडम की फूल मुस्कान, रात की मीठी नींद सब कुछ उनकी मुनफा देनेवाली कंपनी थी - ^^माई कंपनी इस माई चाइल्ड ।**५ पति मास्को में और मॅडम कलकत्ता में । कंपनी के सिवा मॅडम की जिंदगी में बाकी किसी चीज की अहमियत न थी । योगेश, शंतनु ऐसे क्लार्क कि जिन पर हमेशा मॅडम छायी रहती । ^^महिला बॉस को लोग एक्सेप्ट नहीं करपाते हैं । इस कारण स्टाफ को कंट्रोल में अतिरिक्त एनर्जी खपानी पड़ती है ।**५ मॅडम हमेशा अपने कंपनी को ऊँचाई पर ले जाने का सपना देखती है, लेकिन मॅडम की अधिक सक्ती के कारण शांतनु जेसे नोकरी छोड दूसरी जगह चले जाते हैं । पति के मास्को में कन्सालटेंसी का फायदा उठाकर जापान, जर्मनी, और मास्को की प्रतिष्ठित कंपनियों से सॉफ्टवेयर के ऑडर मॅडम को मिलने लगते हैं । मॅडम को अपने ^इंटलिजेन्ट कार्ड तकनीक* इस शोध विश्वास था कि वह जल्द ही भारत के कंप्युटर क्षेत्र का एक सार्वजनिक चेहरा बन जायगा । लेकिन इसका सारा श्रेय रिजर्व बैंक के गवर्नर एवं सचार विभाग के मंत्री ले जाते हैं । आहात होकर मॅडम टूट जाती है । ऐसे समय में वह पति का साथ चाहती है, लेकिन पति भारत आना नहीं चाहता है । वह अपने से आधी उम्र की किसी रशियन महिला से विवाह कर वहीं ठहरता है । मॅडम अकेलेपन के अंधेरों में अकेली दौडती है । उन्हे हिस्टीरिया के दोरे पडने लगते और जीवन के पैतालिस वर्ष में भी वह अकेलेपन की कचोटी में ^लेडी बॉस* आती है ।

प्रस्तुत कहानी में महानगरी कंपनियों की दुनियों में किस प्रकार एक अकेली महिला संघर्ष और अकेलेपन के द्वन्द्व में जिती है। इसका यथार्थ वर्णन किया है ।

सारांशतः मधुकाँकरिया का जन्म कलकत्ता जेसे महानगर में होने के कारण उनका महानगरीय जीवन से गहरा संबंध रहा है । महानगरीय वेश्या जीवन, महानगरीय शिक्षा स्टिस्टम, महानगरीय कंपनियों की दुनियों को उन्होंने नजदीक से देखा और परखा है । परिणात उनके कहानियों मे उसका यथार्थ चित्रण उभरकर आया है । इन चार कहानियों के अलावा महानगर की माँ, लेकिन कॉमरेट, उडान, अन्वेषण और अंत में ईशु आदि कहानियों में महानगरीय बोध स्पष्ट रुप से दिखाई देता है । मानो महानगरी जीवन का बोध उनका समग्र साहित्य है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. रहना नहीं देश बिराना है - (बीतते हुए) - मधु कॉकरिया - पृ.सं. ७३
२. लोड शेडिंग - (बीतते हुए) - मधु कॉकरिया - पृ.सं. ८१
३. फाइल - (भरी दोपहरी के अंधेरे) - मधु कॉकरिया - पृ.सं. ५५
४. फाइल - (भरी दोपहरी के अंधेरे) - मधु कॉकरिया - पृ.सं. ६१
५. लेडी बॉस - (बीतते हुए) - मधु कॉकरिया - पृ. सं. ४३
६. लेडी बॉस - (बीतते हुए) - मधु कॉकरिया - पृ. सं. ४३

०००

(Dr. Haridas Ratn...
Principal
Gramin Arts, Comm. & Science
Mahavidyalaya, Vasantnagar (Kotgyal)
Tq. Mukhed Dist. Nanded (M.S)

ISSN 2394-2266